ISSN-2278-8077

दलित अस्मिता

वर्ष-14, अंक-55

अप्रैल
जून | 2024

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

परामर्श मंडल

लक्ष्मण गायकवाड़, अर्जुन डांगले, चौथीराम यादव, अनिल सरकार, हरीश मंगलम्

कुसुम मेघवाल, बामा, वी. कृष्ण, दयानंद बटोही, इंतिजार नईम, शबनम हाशमी

सवि सावरकर, आर. के. नायक, वाहरु सोनवणे

संपादक

विमल थोरात

सहायक संपादक

दिलीप कठेरिया

संपादन सहयोग

सुनील कुमार 'सुमन', प्रमोद कुमार, भीम सिंह, शिवदत्ता वावलकर, हरेश परमार

वर्ष-14, अंक-55

अप्रैल | जून | 2024

दलित अस्मिता

सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट की त्रैमासिक

ISSN-2278-8077

RNI NO. DELBIL/ 2010/ 51577

साधारण अंक - 60 रुपये
संयुक्तांक - 100 रुपये

वार्षिक सदस्यता - 350 रुपये
आजीवन सदस्यता - 5000 रुपये

संस्थाएं एवं पुस्तकालय
वार्षिक सदस्यता - 700 रुपये
आजीवन सदस्यता - 8000 रुपये

कृपया अपनी सदस्यता राशि
सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट, नई दिल्ली के नाम संपादकीय कार्यालय के पते पर
मनीऑर्डर/ ड्राफ्ट/ चेक द्वारा भेजें।

भीतरी रेखांकन
जितेन्द्र अशोक सालुंके

© सर्वाधिकार सुरक्षित

दलित अस्मिता में प्रकाशित रचनाओं के साथ इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्ट्डीज एवं संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्ट्डीज से संबंधित सभी विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय
सेन्टर फॉर दलित लिटरेचर एंड आर्ट
156, श्री केशव कुंज अपार्टमेंट
पॉकेट-डी, सेक्टर-17
द्वारका, नई दिल्ली-110078
फोन : 011-41716841, 42868489
मोबाईल: 9811807522, 9811135667
ई-मेल: asmita@dalitstudies.org.in

इस अंक में

संपादकीय
विमल थोरात 4

स्तंभ : दलित रंगमंच
दलित रंगमंच का दर्पण : स्वामी अछूतानंद 'हरिहर' – राजेश कुमार 6

वैचारिकी
मलखान सिंह की कविताओं में आंबेडकरवादी सोच का सौंदर्य बोध – प्रो. दामोदर मोरे 14
जाति के प्रश्न और हिंदी दलित कहानियां – प्रो. अजमेर सिंह काजल 22
दलित क्रान्ति के अग्रदूत गुर्रम जाषुवा – डॉ. वी. कृष्ण 35
कोया की वीरागंनाएं – डॉ. टी. जे. रेखारानी 38
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और दलित रंगमंच: प्रासंगिकता और सामाजिक उपयोगिता–डॉ. संतोष राउत 41

क्रांतिकारी मशालें
अद्‌भुत ऐतिहासिक संगठक मान्यवर कांशीराम साहब – डॉ. सी. बी. भारती 46

संस्मरण
जब संतोषी माता शांत हो गई – संजीव खुदशाह 51

लघु कथा
उत्तर – डॉ. पूरन सिंह 53

कहानी
गंगा तुम बहती हो क्यों – जनार्दन 54
औकात – नीरा परमार 63
सर्वेंट क्वॉर्टर – टेकचंद 67

गुजराती कविताएं – बबलदास चावड़ा 79

पंजाबी कविताएं – मदन वीरा 81

हिंदी कविताएं – बच्चा लाल 'उन्मेष', जितेन्द्र विसारिया, जावेद आलम खान, गौरव पठानिया
अमित धर्मसिंह, पूर्णिमा मौर्या, शबनम आलम, शिव कुमार यादव, नरेन्द्र वाल्मीकि, विद्यासागर शर्मा 84

पुस्तक परख
हिन्दी दलित आत्मकथाओं के साथ एक सृजनात्मक सहयात्रा – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे 99
सूरजमुखी अंधेरे के : बलात्कार बनाम देह लिप्सा की अंतर्कथा – डॉ. पूनम तुषामड़ 103
एक बहुजन बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष और समतामूलक समाज – रमाशंकर सिंह 106

संपादकीय

समाज और साहित्य : वर्तमान परिदृश्य में

यूं तो साहित्य समाज का दर्पण होता है पर जब यही दर्पण चेहरे पर लगे दाग को साफ-साफ दिखा देता है तो लोग बौखला जाते हैं। जिन्हें फिक्र होती हैं वो दाग को हटाने में लग जाते हैं लेकिन कुछ लोग आईने को ही तोड़ देना उचित समझते हैं। उनका मानना होता हैं कि वे सबसे सुंदर हैं। आईना जानबूझकर उन्हें कमतर दिखा रहा है। यह एक चिंता का विषय है कि व्यक्ति अपनी कमियों को सुनने और ठीक करने के बजाय कमियां बताने वाले को ही गुनहगार ठहरा रहे हैं। उन्हें झूठे षड्यंत्रों में फंसाकर अपनी शक्ति के दुरुपयोग का परचम लहरा रहे हैं। समाज उनकी चाटुकारिता करता रहे इस लालसा से उन्होंने अपना होने का भ्रम सबको दे रखा है। जहां जाते हैं बस उनके हैं, उनके दर्द को समझते हैं, उनके जीवन के हर पहलू को उन्होंने भी जीया हैं इत्यादि अनर्गल वाक्यों से लोगों के करीब पहुंचकर उनके ही घर-आंगन में सेंध लगाने का कार्य कर रहे हैं।

वर्तमान परिदृश्य को देखकर यह आभास होता है कि यह वो दौर है जहां मानवता का सबसे छद्म रूप दिखाया जा रहा है। मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता किंतु आज का परिदृश्य यह कहता है कि जिसका जब जी चाहे वह खुद को संसार का मालिक घोषित कर सकता है। खुद को राजा मानकर नफरत के किले की नींव स्थापित कर सकता है। अगर इससे भी जी ना भरे तो लोगों के हिस्से की रोटी, कपड़ा, दवा और अस्पताल के पैसों में कटौती कर दिवाली की जगह दीवाला मना सकता है। मन की बात को जानने के लिए जिज्ञासुजन मन की बात बता देने पर तिलमिला जाते हैं। साफ अल्फाजों में आपको ही बिना किसी अपराध के अपराधी की चादर ओढ़ाकर गायब कर देते हैं।

कर्म ही धर्म है यह तथ्य हर काल में सत्य स्थापित हुआ है किंतु वर्तमान समय में कर्मठता को दरकिनार कर चापलूसी की प्रक्रिया अपनाई जा रही है और इस पूरी प्रक्रिया में कुछ लोग बिना पेंदी के लोटे की तरह केवल इधर से उधर लुढ़कते हुए दिखाई दे रहे हैं। वह स्वयं तय ही नहीं कर पा रहे हैं कि उन्हें जनता के दिलों में बैठना हैं या किसी के जूते की नोंक पर। ऐसे समाजसेवियों, कार्यकर्ताओं की सच्ची अकर्मण्यता का ही परिणाम है कि समाज का कुछ हिस्सा हमेशा ही अपने अधिकारों तक पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देता है।

कहने को तो लोकतांत्रिक समाज है किंतु लोक भ्रमित होकर किसी और दिशा में चला गया है और तंत्र बड़े चाव से तमाशबीन बना बैठा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति की समाज निर्माण में एक अहम भूमिका होती है। ऐसे में यह कहना कि कोई एक हिस्सा, उसका विचार, उसका विश्वास ही समाज को आगे ले जाएगा यह पूरी तरह से बेईमानी है। महामारियों के दौर में देखे गए दर्द और अपनों को ना बचा पाने की लाचारी से भी यदि सीख ली जाती तो शायद आज ईश्वर को किराए पर मकान देने की गुस्ताखी न की जाती। जिस समाज के लोग बारिश में पैर समेटकर एक टाटी की आड़ में दुबककर अगली सुबह का इंतजार करते हैं वहीं एक आलीशान महल बनाया जाता है वह भी उनके लिए जिन्हें इसकी बिलकुल भी जरूरत नहीं।

कल्पना में भी भयावह होगा वह दृश्य, जब आपकी बगल में बैठा व्यक्ति बुखार से पीड़ित होकर दम तोड़ देगा और आप उपचार की बजाय उसे उपदेश देकर अपने को ज्ञानी साबित करने में लगे रहेंगे। आज के ये चमचमाते तामझाम उपदेश जैसे ही लग रहे हैं और अपने हक की मांग में सड़कों पर बैठे युवा, बुजुर्ग, बच्चे और महिलाएं बुखार से पीड़ित व्यक्ति जैसे हैं।

घट-घट वासी कहे जाने वाले को एक चारदीवारी का वासी बनाकर उसे भी अपना एजेंट बना लिया गया है और कार्यभार के रूप में बताया गया है कि जनता के बीच तुम ही वह बागडोर हो जिसके सहारे मेरी कुर्सी और उनके अभावग्रस्त जीवन का संतुलन बना रहेगा। धर्म का यह छिछला रूप देखकर ऐसा लग रहा है मानो जड़ें जमीन में बिना खाद पानी के सड़ने लगी हैं और मुरझाती फसलों पर कीटनाशक दवा छिड़ककर इठलाया जा रहा है कि जल्दी ही अच्छी फसल पैदा होगी।

कुछ सालों से इधर भ्रष्टाचारियों को पकड़ लेने की एक मुहिम चली है। जिसका पैमाना कुछ ऐसा बना है कि लोग सत्ता के मनमाफिक काम न करने पर भ्रष्ट हो जाते हैं और करोड़ों की संपत्ति उनके तकिए के नीचे से बरामद की जाती है और इसके ठीक विपरीत जी-हुजूरी में लगे लोग यदि हर कागजी योजना में स्याही बने रहे हैं तो उनसे बड़ा पाक संपूर्ण धरा पर कोई नहीं होगा। इन परिस्थितियों को देखकर यह चौंधियाई जनता असमंजस में है कि आखिर भ्रष्टाचारी हैं कौन? क्या वह है जो अभी-अभी शब्दों के हवाई किले बना कर उनका दुख मिटा गया या वो जो संघर्षों में उनके साथ रहा और उनके जीवन को सहानुभूति की बजाय समाधान देने का प्रयास करता रहा।

साहित्य और समाज का मिला जुला व्यवहार एक लंबे समय से चला आ रहा है। समाज में जो घटित हो रहा है उसे साहित्य में बिना किसी लाग लपेट के लिखना ही श्रेयस्कर होगा और जो साहित्य में है उसे समाज के केंद्र से लेकर छोर तक ले जाने में ही उसकी सार्थकता होगी। वर्तमान समय में साहित्यकारों को यह प्रयास करना होगा कि संवेदना और ज्ञान का इतना सामंजस्य तो बना रहे कि किसी एक पक्ष को पकड़कर उसका गुणगान लिखने से बचा जाए और मानवता के संदेश के साथ लेखनी की धार में निरंतरता को कायम रखा जाए।